Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

सूफी गायकी के विकास में काफ़ी तथा कव्वाली गायन शैलियों का योगदान

Ramandeep Kaur

Research Scholar, Panjabi University, Patiala

शोध सार

आरम्भ से ही संगीत कला के प्रचार–प्रसार में विभिन्न गायन शैलियों के उल्लेखनीय योगदान रहा है वो चाहे शास्त्रीय संगीत हो या उप–शास्त्रीय संगीत। जिस प्रकार शास्त्रीय संगीत ध्रुपद, धमार, ख्याल आदि गायन शैलियों के माध्यम से विकसित हुआ उसी प्रकार ठुमरी, टॅपा, सादरा आदि गायन शैलियों के माध्यम से उप–शास्त्रीय संगीत का विकास हुआ। शास्त्रीय ओर उप–शास्त्रीय संगीत के साथ–साथ संगीत की अनेक ओर गायन शैलियां प्रचार में रही जिनके माध्यम से संगीत की विभिन्न धराएँ (सुगम संगीत, फिल्म संगीत, लोक संगीत, अध्यात्मिक संगीत आदि) विकसत हुई। अध्यात्मिक संगीत की बात करें तो लगभग सभी धर्म के गुरूओं, पीरों, पैगंबरों ने धार्मिक उपदेशों को आम लोगों तक पहुँचाने हेतु संगीत को माध्यम बनाया। मध्य काल में सूफी सम्पदाओं ने भी संगीत का प्रयोग करके सूफीयत के प्रचार–प्रसार किया। सूफीयों द्धारा दरबारों में संगीत को स्थान मिला जिनके प्रचार का माध्यम जिकरी, नुक्ता, ख्याल, कव्वाली, काफी और ग़ज़ल रहा। प्रस्तुत शोध–पत्र में सूफी संगीत में सूफी गायकी के विकास में काफी तथा कव्वाली गायन शैलियों के योगदान पर चर्चा की गई है।

बीज शब्दः जिकरी, नुक्ता, ख्याल, कव्वाली, काफी

भूमिका

भारत की धरती ऋषियों–मुनियों तथा अवतारों की धरती है, जहां काल क्रमानुसार अनेक तेजस्वी महापुरुषों (शेख फरीद, बाबा बुल्लेशाह, सुलतान बाहू, शाह लतीफ, शाह हुसैन, मुराद फरीद, शेख षाही, सरमस्त नूरी आदि) का आगमन हुआ, जिनके द्वारा उचारित काव्य ही काफ़ी काव्य के नाम से विख्यात हुआ। भाव पक्ष से काफ़ी तथा सूफी काफ़ी में प्रेम भाव की प्रधानता रहती है। सूफी काव्य में इश्क मिज़ाजी की अपेक्षा इश्क हकीकी पर बल दिया जाता है तथा इन काफ़ीयों की विषयवस्तु आत्मा से परमात्मा का मिलन होता है। सूफी परम्परा मूलतः प्रेम अधारित है। सूफी मत में प्रेम के दो प्रकार इश्क मिज़ाजी और इश्क हकीकी माने गए हैं। इश्क मिज़ाजी को लौकिक प्रेम माना गया है जबकि इश्क हकीकी को आत्मा का परमात्मा से मिलन माना गया है।

सूफीमत का उदगम अरब देशों में हुआ। डा. साधू राम शारदा लिखते हैं कि सूफीमत माध्य पूर्वी देशों अर्थात ईराक, सीरीया, मिश्रर और ईरान में आठवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ।[1] सूफी भारत में कब आए इस विषय में स्पष्टता नहीं हैं किन्तु यह स्पष्ट है कि जहाँ सूफीयों के भारत आने से इस्लाम धर्म को बल मिला वहीं इसने भारतीय संस्कृति को भी बहुत प्रभावित किया। सूफी मत के अनेक संप्रदाय हैं लेकिन भारत में सूफीयों के चार संप्रदायं अधिक प्रचार में रहेः

1. चिश्ती संप्रदाय
2. कादरी संप्रदाय
3. नक्शबन्दी संप्रदाय

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

4. सुहारवर्दी संप्रदाय

इन सभी संप्रदायों में से चिश्ती सम्प्रादा का प्रचलन अधिक हुआ। भारत में चिश्ती संप्रदाय के मुखिया ख्वाजा निजामुदीन चिश्ती थे। चिश्ती सम्प्रदा में भारतीय संगीत को आधार मानकर उसमें अरबी संगीत का मिश्रण करने अनेक नवीन प्रयोग किये। ख्वाजा निजामुदीन ओलीया के पश्चात् हज़रत अमीर खुसरो ने इस सम्प्रदा के विकास में महत्वपुर्ण योगदान दिया। पंजाब प्रदेश में सूफी गायकी के प्रचलन को देखा जाए तो पंजाबी लोक गायकी में भी काफ़ियों का एक विशेष स्थान है। पंजाब में शाह हुसैन की संगीत एवं काव्य से संजोजित काफीयों को बड़ी शिद्दत से सुना जाता है। इस काव्य का स्वरात्मक एवं तालबद्ध गायन 'सूफियाना–गायकी' कहलाता है। सूफी साहित्य में काफ़ी लोक गायकी को महत्वपूर्ण माना गया है। इसकी उत्पति भारत में मुगल हुकूमत के साथ हुई मानी जाती है। सिंध में रहते हुए ख्वाजा निजामुदीन चिश्ती ने एक बनिये के लड़के से प्रेम संबंधों के विषय पर एक ग़ज़ल सुनी, जिसने उन्हे ह्रदय की गहराईयों तक प्रभावित किया। इन्हीं में से एक थे सरमद, जो जन्म से तो यहूदी थे परन्तु बाद में इस्लाम धर्म स्वीकार कर स्वयं का नाम मुहम्मद सय्यद रख लिया, इन्होंने जो भी काव्य गाया, वह रुबाई के नाम से प्रख्यात हुआ। इनके इस काव्य का उदाहरण निम्नलिखित है–

सरमद के बहुये, इश्क बदनाम शुदी

आज दशमे यहूए, मुए इस्लामी शुदी

मलूम ना शुद के, आज खुदा वो अहमद

बरगश्त बशूए, लअमनो राम शुदी।

अर्थात मैं सरमद की गली में जा बदनाम हुआ हूँ, यहूदी धर्म छोड़ इस्लाम में आया तथा फिर इस्लाम के खुदा और रसूल से हट कर राम तथा लक्ष्मण की भगत मंडली में आ गया हूँ।[2] वर्तमान में दिल्ली की जामा मस्जिद की ओर जाते हुए इनकी मज़ार को देखा जा सकता है।

सूफीयाना गायकी में अल्लाह को पाने के ढंगों का ज़िक्र होता है, इस लिए सूफियों ने अल्लाह की बंदगी हेतु काफ़ी तथा कव्वाली गायन शैलियों के सृजन को माध्यम बनाया। सूफी गायन परम्परा का आरम्भ मुहम्मद गौरी से माना जा सकता है। सूफी मत 'गजनियों' के साथ ही भारत में दाखिल हुआ। 16वीं शताब्दी तक भारत में विभिन्न सूफी संप्रदायों की स्थापना हो चुकी थी, जिनके आधार पर अनेक सूफी सन्तों ने ख्याति प्राप्त की, जिनमें से शेख इस्माइल बुखारी, फखरोद्दीन हुसैन, जंजानी लाहौरी, अबल हसनबिन, अबू उस्मान अलजलाबी, अहमद तोखता, त्रिपती लाहौरी, अज़ीज़ोद्दीन सकी तथा सखी सरवर के नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। ऐसा कहा जा सकता है कि बाबा फरीद के समय भारत में कई सूफियों ने प्रसिद्धी हासिल की।[3] इस प्रकार भारत में सूफियाना गायकी की दो धाराओं का प्रवाह हुआ।

1. काफ़ी गायन शैली

2 कव्वाली गायन शैली

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

काफ़ीः काव्य तथा गायन पक्ष

सूफी फकीर जिन प्रेम युक्त पदों का गायन करते हैं, जिनके पीछे सारी मंडली मूल गायक के पद को दोहराती है, वह काफ़ी के नाम से प्रसिद्ध है।[4] काफ़ी एक भावपूर्ण गायन शैली है जिसको वजद में आकर गाने की रिवायत है। इसमें पंजाबी लोक संगीत अंश की स्वरावटें, स्वर–सराटे, बहलावे तथा तान का मधुर प्रयोग किया जाता है, भावपूर्ण आलाप इस शैली का प्राण तत्व है।[5] एक प्रख्यात विद्वान के मतानुसारः ''काफ़ी पंजाबी काव्य का वह रुप है, जिसके द्वारा मुसलमान सूफी भक्त अपने आध्यात्मिक अनुभवों का वर्णन करते थे। जिस प्रकार नाथों एवं गुरुओं की वाणी को षब्द कहा जाता है, भक्तों की रचनाओं को भजन कहा जाता है, उसी प्रकार सूफी भक्तों की रचनाओं को 'काफी' कह दिया जाता था।''[6]

काफ़ी शब्द की उत्पत्ति का ज़िक्र करें तो प्रो. तेजा सिंह के कथनानुसार काफ़ी शब्द का अर्थ बार–बार आने का आष्य है।[7] अरबी तथा फारसी भाषाओं में काफ़ी शब्द न मिल कर 'क्वाफी' नाम मिलता है। क्वाफी को अंग्रेज़ी में Rhyme कहा जाता है।

भाई काहन सिंह नाभा ने गुरशब्द रत्नाकर में काफ़ी को एक राग माना है।[8] राग के संबंध में राग के स्वरों का वर्णन है न कि गायन रुप का। इसके इलावा भाई काहन सिंह नाभा ने गुरशब्द रत्नाकर में काफ़ी के संदर्भ में लिखा है कि यह पीछे चलने वाले छन्द का वह पद है, जो स्थाई हो तथा जिसको पीछे गाते समय अन्य पंक्तियां जोड़ दी जाएं तथा जो बार–बार ताल विश्राम पर आए, वही काफ़ी है।[9]

श्री श्याम सुन्दर दास के हिन्दी शब्दसागर अनुसार भी काफ़ी को एक विशेष राग बताया गया है, जिसमें कोमल गंधार स्वर का प्रयोग होता है।[10]

देखा जाए तो यह सभी परिभाषाएं शास्त्रीय संगीत के काफ़ी राग की परिचायक है, इनसे काफ़ी गायन शैली के संबंध में कोई स्पष्टता दृष्टिगोचर नहीं होती। काफ़ी गायन शैली एक स्वतन्त्र विधा है, जिसका संबंध केवल काफ़ी राग से जोड़ना तर्कसंगत नहीं होगा।

काफ़ी शब्द पर विचार करने के साथ 'कैफ़' शब्द को भी विचार लेना सार्थक सिद्ध होगा। 'कैफ़' अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है आनन्द, मस्ती, मतवालापन तथा भावों को अभिव्यक्त करना। एक विद्वान ने 'काफ़ी' को 'कैफ़ी' से निकला माना है।[11] कैफ़ी तथा काफ़ी के उच्चारण में स्पष्ट अन्तर होने के कारण यह परिणाम निकालना उचित नहीं होगा परन्तु यह अनिवार्य रुप से कहा जा सकता है कि गायक आध्यात्मिक नशे में चूर होकर गाते थे, चाहे वे किसी भी जाति व धर्म के हो।

श्री गुरु नानक देव ने भी काफ़ियों की रचना की। इसी प्रथा के प्रभावाहीन गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव तथा गुरु तेग बहादुर ने काफ़ियों में संसार की नाष्वानता का चित्रण किया है।[12]

शाह हुसैन से सूफी काव्य परम्परा का प्रारम्भ माना जाता है। शाह हुसैन को काफ़ी गायन में महारत हासिल थी क्योंकि वे शास्त्रीय संगीत में भी प्रवीण थे। आपकी सभी रचनाएं रागात्मक थी जो उनकी सूझ व प्रतिभा को दर्शाती है। उन्होने 35 रागों (राग श्री, गऊड़ी, माझ, काफ़ी, आसा, आसावरी, गुजरी, खट, तुखारी, जोग, परज,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

कान्हडा, भैरव, भैरवी, हिंडोल, सारंग, कल्याण, ललित) आदि में लगभग 165 काफ़ियों की रचना की। शाह हुसैन ने अपनी आंन्तरिक अनुभूति को काफ़ी काव्य के माध्यम से बेहद खूबसूरत ढंग से प्रस्तुत किया है।

शाह हुसैन के पश्चात् सूफ़ी परम्परा ने बाबा फ़रीद से ले कर शाह शर्फ़, शाह हबीब, शाह मुराद, अली हैदर, गुलाम फरीद तथा बुल्ले शाह (बुल्ले शाह की काफियां बहुत प्रचलित हुई। इन्होंने जिन रागों में काफ़ियों की रचना की उनमें केदार, भैरव, भैरवी, हिंडोल, वडहंस, धनाश्री, तिलंग तथा सिंधूरा आदि के नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय) के काल तक लगभग 275 साल की दीर्घ यात्रा तय की है, जिसमें सरोही काव्य के अनूठे नमूने भी मिलते हैं। इन सूफ़ी सन्तों और गायकों के अतिरिक्त 17वीं से लेकर 19वीं षताब्दी के मध्य गुलाब दास, गरीब दास, पारो, साधुजन, वलिदास, करम अली शाह, ईश्वर सिंह, पाल सिंह, मीरा शाह जालंधरी ने भी अपनी रचनाओं से इस धरोहर को समृद्ध बनाया। मौजूदा समय में काफ़ी गायन शैली के दो रुप प्रचलित हैं :

1. मुल्तानी काफ़ी
2. सिंधी काफ़ी।

मुल्तान तथा सिंध दोनों पंजाब के ही उपभाग थे परन्तु देश विभाजन के समय मुल्तान पाकिस्तानी पंजाब की आब–ओ–हवा का अँग बन अलग हो गया। इन दोनों प्रान्तों की सभ्यता तथा संस्कृति आज भी एक दूसरे से मिलती–जुलती प्रतीत होती है। जिन काफ़ियों में सिंधी भाषा का प्रयोग किया गया, उन्हें सिंधी काफ़ी तथा जिस में पंजाबी भाषा का प्रयोग किया गया, उन्हें मुल्तानी काफ़ी कहा गया।

यदि ताल पक्ष की बात की जाए तो काफ़ी गायन शैली को अधिक्तर कहरवा ताल में निबद्ध किया जाता है। वर्तमान में कुछ गायक दादरा ताल में भी इस विधा का गायन करते हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस शैली में प्रयोग होने वाले तालों के बोल इन प्रचलित तालों के परम्परागत तालों से भिन्न होते हैं।

काफ़ी गायकी के विकास में पटियाला तथा शामचौरासी घराने के गायकों के बहुमूल्य योगदान को नकारा नहीं जा सकता। काफ़ी पंजाबी सूफ़ी गायकी में सब से लोकप्रिय काव्य रुप है। यह गायन शैली अपनी उच्चकोटि की काव्य एवं सांगीतिक संयोजना के फलस्वरुप सूफ़ी विचारधारा की वाहक भी बनी। यह गायकी प्रस्तुतकर्ता की सम्पूर्ण मनोदशा को बख्यान करने का सामर्थ्य रखती है। परिणामस्वरुप गायक अपने ह्रदय के समस्त भावों को श्रोताओं के समक्ष रख पाता है। इस षैली का आदार पूर्णतयः लोक संगीत परम्परा है, जिस कारण इसमें लोक संगीत के तत्वों का दृश्टिगोचर होना स्वभाविक है। काफ़ी एक समूह प्रधान सरंचना है, क्योंकि इसे निभाएं जाने की रीत से इसका संबंध समूह से जुड़ा रहा है।

आज भी इन काव्य रचनाओं को शास्त्रीय तथा उप–शास्त्रीय अंदाज़ से गाया जाता है। काफ़ी गायकों में बाबा गणपति, बरकत अली खाँ, आशिक अली खाँ, नुसरत फतेह अली खाँ, गुलाम अली, सलामत अली, हुसैन बख्श, अब्दुल रहमान, लक्ष्मण दास संधू, फरीदा खानुम, ज़ाहिदा प्रवीण, अफशां, इकबाल बानो के नाम विशेष रूप में लिए जा सकते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

कव्वालीः काव्य तथा गायन रुप

कव्वाली शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के 'कौल' षब्द से हुई है। जिसका अर्थ है– कथन, बात, वचन, प्रवचन, इकरार, वादा संबंधित प्रतिज्ञा आदि।[13] एक प्रसिद्ध कलाकार के अनुसार कौल में कुरान तथा हदीस से संबंधित आध्यात्मिक तत्वों का समावेश किया जा सकता है।[14]

कौल शब्द यद्यपि अरबी भाषा का शब्द है, परन्तु कव्वाली गायन फारसी भाषा के माध्यम से प्रसिद्ध हुआ। इसका यही कारण है कि कव्वाली गाने वाले अधिकतर मुस्लिम संत, पीर–फकीर ही थे, क्योंकि मुस्लिम संस्कृति अरब की अपेक्षा फारस में अधिक प्रफुल्लित हुई।

कव्वाली गायन शैली ईरान से भारत आई। कव्वाली की परिभाषा पर चर्चा की जाए तो प्रसिद्ध सूफी गायक पूरन चन्द वडाली के अनुसार ''कव्वाली नाम कौल का है, जिन सूफी पीरों–फकीरों ने बुजुर्गों से किए कौलों को निभाया, उनके किए कौलों का नाम ही कव्वाली है।''[15]

गुलाम रसूल के अनुसार ''कव्वाली एक पारिभाषित शब्द है। इसके आयोजन को महफिल–ए–समा कहा जाता है। समा का अर्थ है सुनना या ज़िक्र करना तथा जिस स्थान पर इसका आयोजन किया जाता है, उसको 'समाखाना' कहा जाता है जो अधिकतर बड़े–बड़े सूफियाना पीर पैगम्बरों की मज़ारों पर होते हैं।'' सूफियाना कलाम पेश करने वाले कलाकारों के दो वर्ग होते हैं –

1. कलावन्त
2. कव्वाल

कलावन्त धमार गायन शैली का गायन करते थे तथा कव्वाल कौल, ख्याल तथा तराना आदि गायन शैलियों का गायन करते हैं।

सांगीतिक इतिहासकारों ने अमीर खुसरो को कव्वाली गायन षैली का ईजाहकर्ता माना है। कव्वाली एक समूह गायन शैली है। गायन के साथ–साथ ताली का भी प्रयोग किया जाता हें इन कलाकारों का एक मुख्य गायक होता है, जो ताल में इसकी पेशकारी का आगाज़ करता है। कव्वाली गायन करने वाले कलाकारों की गिनती लगभग दस होती है। यह सभी गायक सूफियाना रंग में रंगे हुए होते हैं। कव्वाली काव्य की भाषा गज़ल की तरह उर्दू समान है, परन्तु पंजाब में मिश्रित उर्दू पंजाबी भाषा की कव्वालियां सुनने को मिलती हैं। अमीर खुसरो रचित हिन्दी भाषा की कव्वाली 'छाप तिलक सब छीनी रे तोसे नैना मिला के' पाकिस्तान और भारत दोनों में मकबूल हुई।

निष्कर्ष

भारत में सूफियों द्वारा मज़ारों तथा दरगाहों पर सूफियाना कलाम तथा नातिया कलाम द्वारा संगीत परम्परा लगातार चलती आ रही है। पीरों की उपमा के लिए सूफी गायक कव्वाली या काफ़ी गायन करते हैं। वर्तमान में अनेक युवा गायक इस विधा की ओर आकर्षित हो रहे हैं तथा दोनों पंजाब (हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान) की सांझी सांगीतिक विरासत की गूंज पुनः पनप रही है। सूफी गायकी में नुसरत फतेह अली खां, पूरन चन्द वडाली, पूरन शाह कोटि, हंसराज हंस सरदुल सिकंदर, मास्टर सलीम, मनप्रीत अख्तर ओर नूरां बहन आदि सूफी गायकों

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

का इस गायन शैली को प्रख्यात करने में दिया योगदान सराहनीय है। वर्तमान समय में सूफी की काफी ओर कव्वाली गायन शैलियों पर विश्वीकरण का प्रभाव दिखाई पड़ता है जिससे इस गायन शैलियों का मूल विखरने का भी भय बन रहा है।

संदर्भ

1 रेनु सचदेव, धार्मिक प्ररम्पराऐं एवमं हिन्दुस्तानी संगीत, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1999 पृष्ट, 103
2 रोज़ाना अख़बार अजीत, 13 अगस्त 1978
3 हाफिज़ मोहम्मद शेरानी, पंजाब में उर्दू, संग–ए–मील पब्लिकेशन, 2005, पृ. 61.
4 सुरेन्द्र सिंह कोहली, चोणवियां काफ़ियां, भाग पहला, मुनशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्ज़, दिल्ली, 1978, पृ. 23
5 डॉ. गुरनाम सिंह, संगीत निबंधावली, पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, 1991, पृ. 80.
6 प्यारा सिंह भोगल, साहित्यिक निबंद्ध, हिरदेजीत प्रकाशन, जालन्धर, 1970, पृ. 130.
7 प्रिंसिपल तेजा सिंह, नवियां सोचां 'पंजाब विच काफ़ी' एक लेख, लाहौर बुक शाप, लाहौर, 1941, पृ. 51
8 भाई काहन सिंह नाभा, गुरषब्द रतनाकर, भाषा विभाग, पंजाब, 2006, पृ. 319.
9 वही, पृ. 319.
10 श्याम सुंदर दास, हिन्दी षब्द सागर, काशी नगरी प्रचारगी सभा, काशी, 1921, पृ. 537.
11 सुरेन्द्र सिंह कोहली, चोणवियां काफ़ियां, भाग पहला, मुख्य शब्द, मुनशीराम मनोहरलाल पब्लिशर्ज़, दिल्ली, 1978, पृ. 4.
12 पंजाबी साहित्य कोष, पंजाबी साहित्य कोष, गुरू नानक देव यूनिवर्सिटी, 2007, पृ. 221
13 उर्दू हिन्दी शब्दकोश, मुहम्मद मुस्तफा खां, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, 2001, पृ. 141
14 उस्ताद चांद खा, मौसिकी अमीर खुसरो, न्यू हयूमैनिटी बुक्स, 2016, पृ. 243.
15 साक्षात्कार, पूरन चन्द वडाली, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर, 30/12/2015